MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

महात्मा गांधी विद्यामंदिर, पंचवटी, नाशिक संचलित,

कर्मवीर भाऊसाहेब हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, निमगांव

तहसीलः मालेगांव जिलाः नाशिक, महाराष्ट्र - ४२३२१२

संगोष्ठी का विषय

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य

संगोष्ठी दिनांक : १०/११ जानेवारी २०२३

मुख्य संपादक
डॉ. उज्जन कदम

संपादक
राजाराम शेवाळे

Scanned with OKEN Scanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

महात्मा गांधी विद्यामंदिर, पंचवटी, नाशिक संचालित,

कर्मवीर भाऊसाहेब हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, निमगांव

तहसील—मालेगांव जिला—नाशिक, महाराष्ट्र —४२३२१२

संगोष्ठी का विषय —

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य

संगोष्ठी दिनांक — १०/११ जनवरी,२०२३

मुख्य संपादक — डॉ. उज्जन कदम

संपादक — राजाराम शेवाळे

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner

INDEX

01) हिन्दी गजल : जीवनगत सच्चाइयों का आईना
डॉ. ऊषीबाला गुप्ता, कोरबा (छ.ग.) ||09

02) वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी का महत्त्व
राहुल जयसिंग बहोत, मनमाड (नासिक) ||12

03) वैश्विक परिदृश्य में स्वामी विवेकानंद
डॉ॰ ओकेन्द्र–डॉ॰ गीता, उत्तराखण्ड ||15

04) 'वापसी' कहानी में चित्रित वृद्ध विमर्श
डॉ. परमेश्वर जिजाराव काकडे, औरंगाबाद ||19

05) वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय उच्च शिक्षा
Pawan Jee Anand, Ranchi ||22

06) हिंदी भाषा में रोजगार के अनेक अवसर।
डॉ.विजय एकनाथ सोनजे, फैजपुर ||25

07) हिंदी साहित्य में बाल–विवाह विमर्श
पंकज कुमार, मेरठ (उत्तर प्रदेश) ||28

08) वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य
श्री. निलेश एस. पाटील, ता.बागलाण जि.नाशिक ||32

09) मंगलेश डबराल की कविता में पर्यावरण चिंतन
अकील शेख, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश ||34

10) वैश्विक परिपेक्ष्य में कबीरदास
विवेक गुप्ता ||38

11) वैश्विक परिपेक्ष में उपन्यास
साकेत बिहारी, बोधगया ||42

12) वैश्विक परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति २०२०
राज श्री भारद्वाज, रायपुर छत्तीसगढ़ ||48

13) वैश्विक परिप्रेक्ष में तुलसीदास की प्रासंगिकता
डॉ. अनिस बेग रज्जाक बेग मिझा, औरंगाबार्द ||53

14) वैश्विक परिप्रेक्ष्य में साकेत महाकाव्य के जीवन मूल्य
डॉ.गरिमा जैन, कानपुर, उत्तर प्रदेश. ||57

15) हिंदी साहित्य में मानवाधिकार और भारतीय लोकतंत्र
डॉ. संजय एस. घोटे, वर्धा ||62

Scanned with OKEN Scanner

02

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी का महत्त्व

राहुल जयसिंग बहोत
सहाय्यक प्राध्यापक
म.वि.प्र.समाज का, कला, विज्ञान एवं
वाणिज्य महाविद्यालय, मनमाड (नासिक)

प्रस्तावना :

भाषा मनुष्य के भाव तथा सम्प्रेषण को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। इसके जरिए मनुष्य समाज तथा समुह में रहकर अपने विचारों को व्यक्त करता है। भाषा चाहे कोई भी हो उसका व्यापक स्तर उसके बोलनेवाले लोगों की संख्या पर निर्भर होता हैं। विभिन्नता में एकता को प्रतिपादित करनेवाले हमारे भारत देश में कई भाषाएँ बोली तथा समझी जाती है। अपितु भाषाई व्यवस्था के आधार पर भाव सम्प्रेषण की दृष्टि से विचार किया जाय तो सर्वाधिक बोली तथा समझी जानेवाली एवं व्यावहारिक उपयोग मे पायी जानेवाली श्रेणी में हिंदी भाषा को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हैं । हिंदी हमारे देश को एकता के सुत्र में पिरोनेवाली सहज, सरल भाषा हैं इसलिए वह सर्वाधिक लोकप्रिय एवं सशक्त मानी जाती हैं।

आज वैश्विकरण या भुमण्डलीकरण का अर्थ है, विश्व में चारो और अर्थव्यवस्थाओं का बढता हुआ एकीकरण। वैश्विकरण की यह अवधारणा मात्र अर्थव्यवस्था ही नहीं बल्कि भाषायी संस्कार से भी जुड चुकी हैं। वैश्विकरण के इस प्रवाह में हिंदी भाषा तथा साहित्य एक नयी उँचाई को प्राप्त कर चुका हैं। वैश्विक परिदृश्य में हिंदी का अवलोकन करे तो १९५२ ई. में हिंदी विश्व में पाँचवे स्थान पर थी जबकि १९८० ई. के आसपास वह चीनी (मंदारीन) भाषा और अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गयी हैं। इस सम्बन्ध में प्रसिध्द भाषाविद जयंती प्रसाद नौटियाल इनका कहना है कि विश्व में हिंदी प्रयोग करनेवालों की संख्या चीन से भी अधिक है और हिंदी अब प्रथम स्थान पर है।

वैश्विकरण से तात्पर्य :

वैश्विकरण शब्द का उपयोग अधिकतर व्यापार पुँजी प्रवाह, प्रोद्योगिकी एवं आर्थिक वैश्विकरण के संदर्भ में किया जाता हैं। विश्व के सभी बाजारों के एकजुट होकर कार्य करने की प्रक्रिया को वैश्विकरण कहते हैं। सरल शब्दों में कहे तो वैश्विकरण व्यापारिक क्रियाकलापों का अंतर्राष्ट्रीयकरण है जिसके अंतर्गत संपुर्ण विश्व एक ही बाजार के रुप में देखा जाता हैं।

संक्षेप में वैश्विकरण को परिभाषीत करते हुए हम सरल शब्दों में कह सकते है, जब देश विदेश के बाजार एक साथ मिलकर काम करते हैं, तब ऐसी परिस्थिती को वैश्विकरण (ग्लोबलायझेशन) कहते हैं।

हिंदी भाषा को बृहत इतिहास प्राप्त है। हिंदी के प्रारम्भिक हिंदी भाषा के स्वरुप का विकास उत्तर अपभ्रंशकालीन युग से ग्यारहवी शताब्दी से हुआ। पृथ्वीराज चौहान, मुहम्मद घोरी, अल्लाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद तुघलक आदी के शासन काल से लेकर कही न कही ब्रजमिश्रित भाषा का प्रयोग मिलता हैं। डॉ.आबिद हुसैन कहते हैं कि, सिकंदर लोदी के शासनकाल में राज्य का हिसाब किताब हिंदी में होता था। मुगलों की दरबारी अर्थात राजकाज की भाषा उपरी तौर पर फारसी भले ही रही हो, पर बोलचाल की भाषा उस समय काश्मीर, पंजाब, उत्तरी प्रदेश, बिहार, मध्य भारत आदि में हिंदी भाषा ही आंतर भाषा के रुप में विकसित हुई। १८ वी शताब्दी के पश्चात हिंदी ने अपना एक विकसित रुप धारण कर लिया था। भारतीय आर्य भाषाओं में हिंदी का स्थान प्रथम हैं।

अंग्रेजो के शासनकाल में लॉर्ड मेकॉले ने भले ही अंग्रेजी की अनिवार्यता एक ओर की थी किंतु उपरी स्थान पर हेनरी टॉमस कोलेबक ने कहा जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रान्त के लोग करते है, जो पढे-लिखे तथा अनपढ दोनों को साधारण बोलचाल की भाषा है, उसका यथार्थ नाम हिंदी है। इससे ज्ञात होता है कि भारतीय जनमानस में हिंदी का रुझान प्रारम्भ से ही रहा हैं। साथ ही ४ मई १८७० ई. मार्क्स वेलेजली द्वारा स्थायित फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के पश्चात हिंदी के स्वरुप को विकसित करने में भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा कालांतर से इसे एक सर्वमान्य भाषा के रुप में खडी बोली नाम से अभिहित किया गया।

स्वाधीन भारत आन्दोलन ने तो हिंदी को राष्ट्रीय एकात्मता का स्वरुप प्रदान किया। म.गांधी, लो.तिलक, सुभाषचंद्र बोस, लाला लजपतराय, जैसे कई आन्दोलनकारी नेताओं को सराहा जा सकता हैं। भारतीय जनमानस को

Scanned with OKEN Scanner

आजादी के समर में कुद पडने के लिए तथा देश के प्रति अपनी आस्था को उजागर करने के लिए हिंदी भाषा को केंद्र में रखकर बृहत कार्य किया।

२१ वी सदी के पहले दशक में हिंदी भाषा में जो परिवर्तन हुए है वे साधारण नहीं है। आज हिंदी का स्वरुप ग्लोबल हो चला हैं। व्याकरणिक संरचना, व्यावहारिकता, बढता जनसंपर्क, साहित्यिक महत्त्व आदि की दृष्टि से आज हिन्दी का महत्त्व अन्तराष्ट्रीय स्तरपर बढ रहा हैं। आज हिंदी भाषा का अध्ययन विश्व के अनेक देशों में विश्वविद्यालय स्तर पर हो रहा हैं। जिसमें मॉरीशस, फिजी, हॉलेंड, जर्मनी, अमरिका, ऑस्ट्रेलिया, सुरिनाम, रुस, चीन, जापान आदि। विदेशों में कई प्रवासी भारतीयों द्वारा हिंदी के संदर्भ में बृहत कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में स्वीडन की सुप्रसिध्द हिंदी प्रचारक सुश्री सेरेना ब्रेतोऐवा एवं स्वीडन के चार्ल्स थॉमसन जैसे हिंदी प्रेमी दिखाई देते है। जो हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दे रहे हैं।

हिंदी के अंतर्राष्ट्रीय स्वरुप को सर्वाधिक गति तथा महत्त्व प्राप्त हुआ वह हमारे देश के नेताओं ने समय-समय पर अंतर्राष्ट्रीय मंचो पर हिंदी में भाषण देकर उसकी उपयोगिता का उद्घोष किया। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व.अटलबिहारी वाजपेयी जी ने (युनो) सन १९७७ में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत अटलबिहारी वाजपेयी जी ने विदेश मंत्री के रुप में कार्यरत समय में यु.एन.ओ. (युनो) में भारत के प्रतिनिधीत्व करते हुए हिंदी में भाषण किया। उसकी कुछ अंश जैसे- में भारत की जनता की और से राष्ट्रसंघ के लिए शुभकामनाओं का संदेश लाया हुँ। महासभा के इस ३२ वें अधिवेशन के अवसर पर मैं राष्ट्रसंघ में भारत की दृढ आस्था को पुनः व्यक्त करना चाहता हुँ। वसुधैंव कुटुम्बकम की कल्पना बहुत पुरानी हैं। भारत में सदा से हमारा इस धारणा में विश्वास रहा है कि सारा संसार एक परिवार हैं। अनेकानेक प्रयत्नों और कष्टों के बाद संयुक्त राष्ट्र के रुप में इस स्वप्न के साकार होने की संभावना हैं। इन्ही शुभकामनाओं के साथ मैं विराम लेता हुँ, जय हिंद, जय जगत। यह भी सर्वविदित है कि युनेस्को के बहुत से कार्य हिंदी में सम्पन्न होते हैं । इसके अलावा अब तक विश्व हिंदी सम्मेलन मॉरीशस, त्रिनिदाद, लंदन, सुरीनाम तथा न्युयॉर्क जैसे स्थलों पर सम्पन्न हो चुके है, जिनके माध्यम से विश्व स्तर पर हिंदी का स्वर सम्भार महसुस किया गया। हिंदी को वैश्विक संदर्भ और व्याप्ति प्रदान करने में भारतीय विद्यापीठों की केंद्रीय भुमिका रही हैं । जो विश्व के अनेक राष्ट्रो में फैली हुई हैं । इस विश्वविद्यालयों मे शोध स्तर पर हिंदी अध्ययन अध्यापन की सुविधा है, जिसका सर्वाधिक लाभ विदेशी अध्येताओं को मिल रहा हैं।

हिंदी भाषा को लोकल टु ग्लोबल की ओर अग्रेसर होने में विश्व हिंदी सम्मेलनों की भुमिका महत्त्वपुर्ण रही हैं। जैसे इस संदर्भ में सर्वप्रथम नागपुर में १० जनवरी १९७५ को पहला विश्व हिंदी सम्मेलन हुआ था। जो सर्वाधिक सफल एवं चर्चा का विषय रहा। हिंदी भाषा को वैश्विकरण के वक्ष बीच सँजोने का काम इस माध्यम से किया गया जिससे वसुधैव कुटुम्बकम् की प्रचिती का जीवंत उदाहरण सबके सामने रखा गया। अब तक आयोजित हुए नौ विश्व हिंदी सम्मेलन इस बात के साक्षी हैं कि वैश्विक स्तरपर हिंदी अपना एक सर्वमान्य धरातल निर्मित कर चुकी हैं । इन सम्मेलनों में विद्वानों द्वारा पढे गए पर्चे, परिचर्चाएं, विमर्श, निष्कर्ष, सुझाव, निर्णय आदि हिंदी को विश्वव्यापी बनाते हैं।

नागपुर में १० जनवरी १९७५ को पहला विश्व हिंदी सम्मेलन संपन्न हुआ था। इसलिए भारत के पुर्व प्रधानमंत्री डॉ.मनमोहन सिंह ने २००६ से विश्व हिंदी दिवस १० जनवरी को मनाने की घोषणा की । इसलिए सन २००६ से विश्व के समस्त दुतावासों के साथ-साथ भारत और विश्वभर में विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है।

बहुत कम लोग इस तथ्य से परिचित है कि संयुक्त राष्ट्र की संस्था युनेस्को ने यह स्वीकार किया है कि हिंदी विश्व की तिसरी सबसे बडी भाषा हैं। युनेस्को की सात मान्यता प्राप्त भाषाओं में हिंदी को स्थान प्राप्त है।

हिंदी भाषा आज महज संवाद का माध्यम भर नहीं रह गई है। बल्कि यह हमारी पहचान और जरुरत बन गई हैं। बदलते समाज और व्यापक होती जरुरतों के बीच हिंदी ने तेजी से अपने पंख पसारे है जो कि हिंदी भाषा के विकास के लिए शुभ संकेत हैं। इसका उदाहरण है कि आज सुचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र में हिंदी ने अपनी पहचान बनायी हैं। जिसमें कम्प्युटर क्रांती, अनुवाद, आशुलिपी, जनसंचार माध्यमों के विभिन्न संचार संसाधन आदि में हिंदी भाषा ने अपना अधिकार प्राप्त किया हैं । मायक्रोसॉफ्ट के प्रवर्तक बिल गेट्स ने हिंदी को कंप्युटर के लिए उपुक्त भाषा स्वीकार करते हुए द्विभाषिक सोफ्टवेयरों का मार्ग प्रशस्त किया है। आज वर्ड प्रोसेसिंग, वेब दुनिया आदि में हिंदी का प्रयोग किया जा रहा हैं। कम्प्युटर में

Scanned with OKEN Scanner

साहित्यिक, रुप को और आगे सुचारु रुप से बढाना होगा। जिससे बाजारवाद, भुमंडलीकरण की प्रक्रिया में हिंदी को कोई अन्य नई भाषा बाधा निर्माण न कर सके।

निष्कर्ष :-

वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी की भुमिका को देखनेपर ज्ञात होता है कि, हिंदी संपुर्ण भारतवर्ष को विश्वव्यापी बनाते हुए एक माला के मनकों की तरह एकता के सुत्र में बाँधे रखती हैं। जनमानस की आशाओं के अनुरुप हिंदी का हर क्षेत्र में दृतगति से विकास हो रहा हैं। यह भारतीयों के त्याग, बलिदान का प्रतिक होते हुए समस्या विश्व को जोडनेवाली सामाजिक कडी के रुप में उभरी हैं व मानवता के अस्तित्व की पहचान बनी हैं। हिंदी करोडों भारतीयों के अस्तित्व को ऊर्जा व शक्ति देनेवाली भाषा हैं और अंत में भाषाई सौहार्द को गौरवान्वित करते हुए भारतेंन्दु हरिश्चंद्र जी की प्रसिध्द पंक्तियों के साथ धन्यवाद ज्ञापित करता हुँ।

निज भाषा उन्नती अहै सब उन्नति के मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय के सूल।

संदर्भ सूचि :

१) राजभाषा हिंदी - डॉ.कैलाशचन्द्र भाटिया, (पृष्ठ-१०,१५,४६,४९)- वाणी प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली
२) नवजागरण कालीन हिंदी - डॉ.संगीता पारेख (पृष्ठ-११, ९४,१३९)- श्रीनिवास पब्लिकेशन, वैशाली नगर,जयपुर-३०२०२१
३) विश्व हिंदी सम्मेलन अंक (केंद्रीय हिंदी निर्देशालय)

⌘⌘⌘

03

वैश्विक परिदृश्य में स्वामी विवेकानंद

डॉ. ओकेन्द्र
प्रखर शिक्षाविद् एवं समीक्षक
ऊखीमठ, जनपद—रूद्रप्रयाग (उत्तराखण्ड)

डॉ. गीता
भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
(उत्तराखण्ड)

****

सारांश :

स्वामी विवेकानंद जी का एक व्यक्तित्व ही नहीं बल्कि भारत के लिए एक विशाल बुनियाद है। यह एक ऐसी बुनियाद है जिस पर भारत का विराट सांस्कृतिक महल खड़ा है। स्वामी विवेकानंद जी ने आध्यात्म, वैश्विक मूल्यों, धर्म चरित्र निर्माण और शिक्षा एवं समाज को बहुत विस्तारित रूप से गहरे आयामों से विष्लेशित किया है। सिर्फ भारत के युवा ही नहीं बल्कि विष्व के युवाओं के लिए उनके बिचार प्रासंगिक एवं अनुकरणीय है। उनके विचार आज के विखंडित एवं पथभ्रष्ट समाज को जोड़ने के रामबाण औषधि का काम करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। स्वामी विवेकानंद जी ने प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए एक संदेश दिया था—

"जागो, उठो और तब तक प्रयत्न करो जब तक कि लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।"

कूट शब्द : जीवन—चरित्र, विवेकानंद के विचार, राष्ट्रवाद व विश्वधर्म, वैश्विक परिदृश्य व राष्ट्रवादी चिंतन, विश्व निर्माण की भावना, आध्यात्मिक अनुभूति, मानवतावाद, देश—प्रेम।

स्वामी विवेकानन्द संक्षिप्त परिचय :

स्वामी विवेकानन्द जन्म १२ जनवरी १८६३

Scanned with OKEN Scanner

हिंदी सॉफ्टवेअर, युनिकोड, टंकण तथा विभिन्न एप्लिकेशन की वजह से सुचना क्रांती का प्रचार-प्रसार तेजी से बढ चुका हैं। राष्ट्रीयकृत बैंको के कामकाज, केंद्रिय सरकारी दफ्तर में उपभोक्ता एवं बाजारवाद के युग में हिंदी में कम्प्युटर पर कामकाज किए जा रहे हैं । संक्षेप मे तकनिकी क्षेत्र में हिंदी ने अपना स्थान निर्धारित कर लिया हैं।

साहित्य के माध्यम से हिंदी को वैश्विक पहचान मिली है। साहित्य के क्षेत्र में हिंदी की भुमिका शुरु से ही कारगर रही हैं । साहित्य के माध्यम से समानज को नयी दिशा देने का कार्य किया गया हैं । जिसमें भाषा मुख्य प्रवाहमयी साबित हुई हैं । हिंदी भाषा के माध्यम से प्रारंभिक तथा मध्य,त काल से ही उद्‌बोधक हुआ हैं । कबीर, सुरदास, तुलसीदास, दादुदयाल, रहिम, भारतेंदु हरिश्चंद्र, मेथिलीशरण गुप्त, हजारप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, निराला, प्रेमचंद ,जयशंकर प्रसाद ऐसे कई लेखक जिन्होने सामाजिक कार्यो के साथ-साथ हिंदी के प्रचार एवं प्रसार में अपना अमुल्य योगदान दिया हैं । जिसका परिणाम यह है की आज विश्वस्तर पर हिंदी साहित्य ने अपना परचम लहराया है।

इससे स्पष्ट हैं की हिंदी को वैश्विक धरातल पर अपनी पहचान सिध्द कराने में सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक व्यावहारिक सभी दृष्टि से महत्त्व प्राप्त हैं ।

हिंदी आज महज साहित्य की भाषा नहीं, बल्कि बाजार की भाषा हैं । भुमंडलीकरण के इस दौर में उपभोक्तावादी संस्कृती ने विज्ञापनों को जन्म दिया जिससे हिंदी का अनुप्रयोग बढने के साथ-साथ युवाओं को रोजगार के नए अवसर भी प्राप्त हुए। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इस बात से भलीभांति अवगत हैं की भारत उनके उत्पाद का बडा बाजार है और यहाँ के अधिकतर उपभोक्ता हिंदी भाषी हैं । इसलिए उन्हे अपना उत्पाद बेचने के लिए उसका प्रचार-प्रसार हिंदी में करना पडेगा। परिणामतः हिंदी आज बाजारवाद की दृष्टि से अत्यंत कारगर साबित हो रही हैं ।

विभिन्न देश के निकलनेवाली हिंदी पत्र पत्रिकाओं ने भी हिंदी को वैश्विक फलक पर ले जाने में उल्लेखनीय भुमिका निभाई हैं । अंतरराष्ट्रीय स्तर हिंदी को बढावा देनेवाली संस्थाओं में अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिती (संयुक्त राज्य अमिरात), मॉरीशस हिंदी संस्थान, विश्व हिंदी सचिवालय (मॉरीशस), हिंदी सोसायटी (सिंगापूर), हिंदी परिषद (नेदरलैंड) आदि ने महतत्वपुर्ण योगदान दिया हैं । आज हिंदी जो वैश्विक आकार ग्रहण कर रही हैं उसमें रोजी-रोटी की तलाश में अपना वतन छोडकर गए गिरमिटिया मजदुरों के योगदान को कभी भुलाया नही जा सकता। गिरमिटीया मजदुर अपने साथ अपनी भाषा और संस्कृति भी लेकर गए, जो आज हिंदी को वैश्विक स्तर पर फैला रही हैं। संप्राति हिंदी को अंतरराष्ट्रीय दर्जा प्राप्त है, क्योंकि यह अनेक विदेशी भाषाओं को न केवल स्वीकार करती है, बल्कि विश्व की समस्त भाषाओं के आत्मसात करने की क्षमता रखती हैं । हिंदी के विकास के लिए विश्व की पैंतीस सौं विदेशी कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया जा चुका हैं।

हाल ही में कोरोना जैसी महामारी का फैलाव तेजी से संपुर्ण देश में हुआ ऐसे समय देश की जनता को इस बीमारी से अगाह करने के लिए बेहद सम समय में सभी सुचनाएँ एवं संदेश हिंदी में ही जारी किए गए । देश में तालाबंदी (लॉकडाऊन) की घोषणा हो या बीमारी के संक्रमण से बचने की सावधानियाँ आदि संदेश प्रसारित हुए ताकि आम जन की भाषा हिंदी में लोगों को शीघ्र ही इस आपातकाल की गंभिरता का अहसास हो सके । तालाबंदी के समय में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय (भारत सरकार) तथा राष्ट्रीय स्वास्थ संगठन की ओर से राष्ट्र की जनता को संबोधित करते हुए संदेश प्रसारित किए गए। राष्ट्र के नाम संदेश या देश की जनता से सीधा संवाद मा.प्रधानमंत्री श्री. नरेंद्र मोदी जी द्वारा समय-समय पर दिया गया । यह केवल और केवल हिंदी भाषा के कारण ही सम्भव हुआ।

स्पष्ट है कि, राष्ट्र को एकसंघ बनाने में तथा वैश्विक धरातल पर अपना अस्तित्व सिध्द करने में हिंदी ही वह शक्ति हैं जो भारतीयों को संस्कृति के आधार पर जोड सकती हैं। निःसंदेह हिंदी अपने जन्म और कर्म दोनों ही दृष्टियों से सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं भाषिक समन्वय तथा सौहार्द का प्रतिक रही हैं।

वैश्विकरण की प्रक्रिया में हिंदी की महत्ता को समझने पर अत्याधिक हर्ष तो प्रत्येक भारतीय नागरिक को होता है। किंतु आज संपुर्ण अभ्यास के दौरान यह भी निष्कर्ष सामने आ रहे हैं कि बढते भुमंडलीकरण, व्यापारीकरण में महासत्ता देशों में भारत के साथ साँझा होते हुए भाषिक व्यवस्था में अंतर देखा जा रहा हैं । दो देशों में संवादों के दौरान एक नयी भाषा हिंदी और इंग्लीश का मिश्रित रुप हिंग्लिश ने जन्म ले लिया हैं। जो आनेवाले कल में हिंदी के विकास में बाधा निर्माण कर सकती हैं । इस बात को पहचानते हुए हमें हिंदी को व्यावहारिक,

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2319 9318

Publisher & Owner

Archana Rajendra Ghodke

Harshwardhan **P**ublication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126

(Maharashtra) Mob.09850203295

E-mail: vidyawarta@gmail.com

www.vidyawarta.com

Scanned with OKEN Scanner